

शालिग्राम की कथा-यात्रा

* श्वेता सिंह

* शोधार्थी, हिन्दी विभाग, भू० ना० मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा
मो. ९७३५१११०६४

Received: February 20, 2026

Accepted: March 22, 2026

शोध सार

हिन्दी साहित्य के आंचलिक कथाकार शालिग्राम साठोत्तरी भारत के लोक जीवन की अनुभूतियों को उत्कृष्टता के साथ अभिव्यक्त करने वाले उपन्यासकार, कवि, रिपोतार्जकार हैं। कोसी पुत्र शालिग्राम निरंतर साहित्य साधना में लीन रहने लगे। अपनी रचनाओं में अंचल की संवेदनशील भावों को समेटते तथा अंतर्मन के तथ्यों को कहानी के रूप में संवेदित करने लगे। इनकी प्रथम कहानी “बासमती” 1962 ई. में प्रकाशन में गई। इससे पहले ये “इंसान की लाश” का संपादन 1953 ई. में किये। बासमती कहानी अपने कथ्य और विषय वस्तु के लिहाज से बेहद चर्चित रहा। शालिग्राम की तमाम कहानियों में कोसी अंचल की पीड़ा, कोसी की कछार पर बसे पात्रों की जीवन के रंग कोसी का तांडव कहें या कोसी धारा की सर्पिली चाल कहें जो नदी के कटाव की यातना झेलते पर बेपरवाह जिंदगी बिताते। जल (बाढ़) रूपी चादर उतारते हैं और भू- फोड़ फसलों की होड़ में लीन हो जाते हैं। इनके तमाम पात्र गाँव- गाँव भाषा बोलते निम्नवर्गीय या मध्यमवर्गीय हैं जो सदैव अपने मुकाम प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

बीज शब्द : निम्नवर्ग, मध्यमवर्ग, अंचल की पीड़ा, भेदभाव, प्रगतिशील विचारधारा।

हिन्दी साहित्य के आंचलिक कथाकार शालिग्राम साठोत्तरी भारत के लोक जीवन की अनुभूतियों को उत्कृष्टता के साथ अभिव्यक्त करने वाले उपन्यासकार, कवि, रिपोतार्जकार हैं। गंगा का उत्तरी मैदानी भूभाग जो कोसी की बदलती धारा के साथ अपना इतिहास, भूगोल बदलता रहा, उसी मैदानी भूभाग में बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी शालिग्राम का जन्म 21 मई 1934 ई. में खगड़िया जिलांतर्गत बेलदौर प्रखंड के पचौत ग्राम में हुआ। 1934 ई. का ऐतिहासिक वर्ष प्रलयकारी भूकंप

का साल जो पल में प्रलयकारी दृश्य के लिए जाना जाता हैं। इनका माटी- भीत का घर पलभर में धराशायी हो गया और कोसी कछार का बालू भर गया। जन्म के अल्प समयोपरांत इनकी माता फुलवती असाध्य रोग की शिकार बन गई। सामाजिक भेदभाव को भुलाते हुए भोलिया के दूध से पालन हुआ। जाति से मुसहर बनी पोषिका माँ और सरयुग बाबू का परिवार निहाल हुआ।

शालिग्राम की प्रारंभिक शिक्षा बेलदौर में हुई। हाई स्कूल की शिक्षा आलमनगर से प्राप्त करने के क्रम में हिन्दी शिक्षक विद्याकर कवि से अधिक लगाव हुआ। मैट्रिक पास करने के बाद भागलपुर के अच्छे कॉलेज टी. एन. बी. (T. N. B.) में नामांकन कराये और स्नातक (बी. ए.) पास कर एम. ए. में नामांकन कराये।

विद्याकर कवि की तुकबंदी और विष्णु किशोर झा 'बेचन' से प्रभावित हो कर साहित्य सृजन का ख्याल आने लगा। वैसे वेद, पुराण, महाभारत, रामायण के संदर्भ में वंशानुगत प्रभाव पड़ा। प्रेमचंद, शरद बाबू, फणीश्वर नाथ ' रेणु' , नागार्जुन, रामवृक्ष बेनीपुरी की रचनाओं का गहन अध्ययन अमिट छाप छोड़ा। बेचन जी के उत्साह वर्धन से साहित्यकार बनने की धुन सवार हुई। सर्व प्रथम बेचन जी के कृपा से पथिक उपनाम से संपादक बने। अब शालिग्राम उर्फ पथिक नाम चर्चा का विषय बन गया। अनेक साहित्यकारों के अंगिनत पत्रों से तथा आगंतुकों के कारण इनका निवास स्थान साहित्य तीर्थ बनने लगा जहाँ साहित्यकारों का साप्ताहिक जमावड़ा लगता। ये कुछ अटपटी रचना करते और भद्देपन का अहसास होने पर फाड़ते जाते पुनः रेणु, नागार्जुन, बेनीपुरी की रचनाओं को पढ़ते और अपने सपने साकार करने में लीन हो जाते। 1990 ई. में पचौत पंचायत के मनोनीत मुखिया बने। लोक- आस्था के संपुरित प्रेरणा स्वरूप हिन्दी, मैथिली, अंगिका, लोक नाट्य, लोकगीत, लोक कलाओं के समारोहों में मंचीय प्रस्तुति हेतु प्रथम वक्ता के रूप में इनकी प्रस्तुति मनमोहक होती।

राजनीति के मंच में (सोशलिस्ट) समाजवाद के समर्थक रहे। मनोनीत मुखिया के रूप में राजनीति के मजे लोगों से सम्पर्क हुआ। पर सदैव समन्वय की धारा के समर्थक शालिग्राम सांस्कृतिक परंपराओं को उत्कर्ष केंद्र मानते और साहित्य सेवा के सहारे लोक गाथा और लोक साहित्य के नक्षत्र बनने की कल्पना में खोए रहते।

कोसी पुत्र शालिग्राम निरंतर साहित्य साधना में लीन रहने लगे। अपनी रचनाओं में अंचल की संवेदनशील भावों को समेटते तथा अंतर्मन के तथ्यों को कहानी के रूप संवेदित करने लगे। इनकी प्रथम कहानी “ बासमती” 1962 ई. में प्रकाशन में गई। इससे पहले ये “ इंसान की लाश” का संपादन 1953 ई. में किये। बासमती कहानी अपने कथ्य और विषय वस्तु के लिहाज से बेहद चर्चित रहा। पत्रिकाओं में पाठकों ने बखूबी सराहना की दिलचस्प शीर्षक लोगों के मन में पात्रों के कथन की चुभन अंदर धँसता गया और बसमतिया का चरित्र ईद-गिर्द नज़र आने लगा। समाज के दबे- कुचले लोगों की पीड़ा को सामने लाने वाले शोषितों की आवाज़ बन उभरने लगे। गाँव की गरीबी गम के आँसुओं को पीती रही। राजनीतिक चेतना आत्मविश्वास जगाती रही फलस्वरूप शोषण का स्वरूप सिमटता गया। परंपरागत मालिक- मुख्तार,काश्तकार और जोतदार नियम-कायदे के घोड़े पर सवार मजदूर-बनिहार हकीकत रूप के मोहताज रहने लगे।

“पाही आदमी” की रचना 1963 ई. में हुई और धर्मयुग पत्रिका में छपी। यह कहानी पाठकों को मोहित करती उस सजी- सँवरी नाव के समान प्रतीत होने लगी जो पानी के बहाव में विजय पताका फहराती कोसी के विभिन्न घाटों से गुजरती हैं। कहानीकार जीवन के ज्वार- भाटा को पार करते नवीन सतरंगी भाव को बिखेरते हुए प्रेम के प्रबंधन को जीतता हैं। इस कहानी में उम्मीद और उल्लास है, प्रेम और समर्पण है, आवेग और आक्रोश है, संकल्प और संतुष्टि है। दो युवाओं का प्रेम भरा मन है और निभाने का संकल्प है। सारी कुंठित भावनाओं को भुला कर कोका फूल की जयमाला पहनाने की लालसा है। नये जीवन में प्रवेश करने की तत्परता है।

“केंचुल” कहानी के पात्र चाय दुकान पर काम करने वाले सिधेसरा और रेलवे लाइन के किनारे कोयला चुनने वाली पियरिया के बालपन प्रेम पर आधारित हैं। गरीबी के कारण परिवार की जरूरत को पूरा करने के खातिर बचपन से चाय दुकान पर खटता है। पियरिया कोयला चुनने से उबती है और चाय पीने की इच्छा, बिना पैसे चुकाए जाना, गर्म कोयले से हाथ जलना, सिधेसरा में प्रेम और सेवा भाव जगना और पियरिया के परिवार का गुजर- बसर जले कोयले से चलना एक अजीब संवेदना को जगाता है। राम लीला से प्रभावित दोनों अलग दुनिया बसाने की उत्सुकता में खोए दुकान छोड़ देता है। इस कहानी में बालमन के प्रेम का निरूपण अतिसुंदर ढंग से किया गया है। दोनों पात्र संसार की गतिविधियों को त्याग कर जीवन की नई राह पर निकल जाता है।

शालिग्राम अपने अंचल की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक घटनाओं को मन में माला की तरह गूँथते - पिरोते और लेखनी के माध्यम से व्यक्त करते हैं। “नटुआ दयाल” कहानी सती बिहुला और बाला लखिन्दर के प्रेम कथा पर आधारित है। इस लोककथा में बिहुला अपने सतीत्व के बल पर दोबारा पति को जिंदा करती हैं। कहानीकार अपने पात्रों के माध्यम से पुरुषवादी सोच, संकीर्ण मानसिकता, को दर्शाने का प्रयास किया है। प्रगतिशील विचारधारा से प्रभावित कहानीकार सामाजिक बदलाव का संकेत देते हुए, अत्यंत संवेदनशील भाषा का प्रयोग करते हुए, पठनीयता को बरकरार रखने में सफल रहे।

इन कहानियों के अतिरिक्त कई कहानियाँ यथा साफा, इजोतिया, रकास, मरद की बात, सात आंचलिक कहानियाँ और नई शुरुआत में संकलित हैं।

शालिग्राम की तमाम कहानियों में कोसी अंचल की पीड़ा, कोसी की कछार पर बसे पात्रों की जीवन के रंग कोसी का तांडव कहेँ या कोसी धारा की सर्पिली चाल कहेँ जो नदी के कटाव की यातना झेलते पर बेपरवाह जिंदगी बिताते। जल (बाढ़) रूपी चादर उतारते हैं और भू- फोड़ फसलों की होड़ में लीन हो जाते हैं। इनके तमाम पात्र गाँव- गाँवई भाषा बोलते निम्नवर्गीय या मध्यमवर्गीय हैं जो सदैव अपने मुकाम प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

सन्दर्भ

1. शालिग्राम की सात आंचलिक कहानियाँ-आवरण पृष्ठ

2. देखा दर्पण अपना तर्पण पृ० संख्या-68
3. पाही आदमी - आवरण पृष्ठ
4. कैचुल - पृ० संख्या - 18,22
5. नटुआ दयाल पृ० संख्या - 4,5

